

भावभीनी श्रद्धांजलि



“ एक तस्वीर
जीवन की सच्चाई को पकड़ लेती है,
और वह सच्चाई हमेशा
जीवित रहती है। ”

रघु राय
नहीं रहे

कैमरे का शटर थमा,
लेकिन इतिहास बोलता रहेगा...



Raghu Rai
(1942-2026)

26 APR.2026,Lucknow | फोटो-स्टोरी ई-मैगजीन

भारत के महान फोटोग्राफर रघु राय का 26 अप्रैल 2026 को निधन हो गया। 83 वर्ष की आयु में उन्होंने अंतिम सांस ली। उनके कैमरे ने भारत के जीवन, संघर्ष और संस्कृति को इस तरह कैद किया कि उनकी तस्वीरें आज भी इतिहास की तरह जीवित हैं।



“ आप नहीं हैं, लेकिन आपकी तस्वीरें
हमेशा हमारे साथ रहेंगी...
आपकी नजर अमर है। ”

-ज्योतिर्मय यादव

रघु राय: एक नजर में



जन्म
1942



प्रारंभ
1965



पद्मश्री
1971

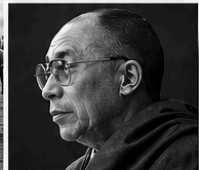


M
Magnum
Photos



18+
पुस्तकें

कैमरे में कैद एक युग



भोपाल गैस त्रासदी, 1984

बांग्लादेश मुक्ति संग्राम, 1971

दलाई लामा



● प्रमुख करियर पड़ाव:

1976 में उन्होंने The Statesman छोड़ा और कोलकाता से प्रकाशित साप्ताहिक समाचार पत्रिका Sunday के लिए पिक्चर एडिटर के रूप में कार्य किया। 1980 में उन्होंने India Today के प्रारंभिक वर्षों में पिक्चर एडिटर/विभुअलाइंजर/फोटोग्राफर के रूप में कार्य किया। 1982 से 1991 तक उन्होंने विशेष अंकों और डिजाइन पर काम किया और सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक विषयों पर अग्रणी फोटो-निबंध प्रस्तुत किए।

● प्रमुख कृतियाँ और पुस्तकें:

18 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित की हैं, जिनमें Raghu Rai's Delhi, The Sikhs, Calcutta, Khajuraho, Taj Mahal, Tibet in Exile, India और Mother Teresa शामिल हैं।

● भोपाल गैस त्रासदी पर महत्वपूर्ण कार्य:

1984 की भोपाल गैस त्रासदी और उसके दीर्घकालिक प्रभावों पर एक गहन डॉक्यूमेंट्री प्रोजेक्ट पूरा किया, जिसके परिणामस्वरूप एक पुस्तक और तीन प्रदर्शनी तैयार हुईं, जो 2004 से अब तक यूरोप, अमेरिका, भारत और दक्षिण-पूर्व एशिया में प्रदर्शित हो रही हैं।

● सम्मान और उपलब्धियाँ:

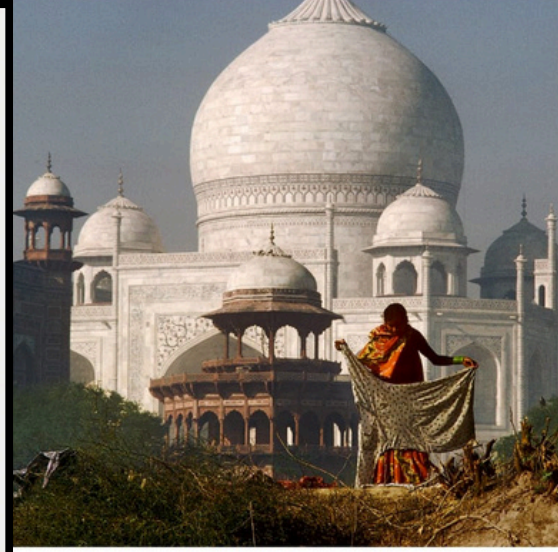
1971 में उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया गया। 1992 में National Geographic के कवर स्टोरी Human Management of Wildlife in India के लिए उन्हें व्यापक सराहना मिली। उनकी कृतियाँ लंदन, पेरिस, न्यूयॉर्क, हैम्बर्ग, प्राग, टोक्यो, ज्यूरिख और सिडनी में प्रदर्शित किए गए हैं और Time, Life, Geo, The New York Times, The Sunday Times, Newsweek, The Independent और The New Yorker में प्रकाशित हुई हैं।

● जुरी और योगदान:

वे तीन बार World Press Photo के जुरी और दो बार UNESCO के International Photo Contest के जुरी सदस्य रह चुके हैं।

● व्यक्तिगत जीवन:

रघु राय दिल्ली में अपने परिवार के साथ रहते थे और जीवन भर Magnum Photos के संवाददाता रहे।



TAJ MAHAL

All image Credit-Magnum Photos





फोटो - स्टोरी

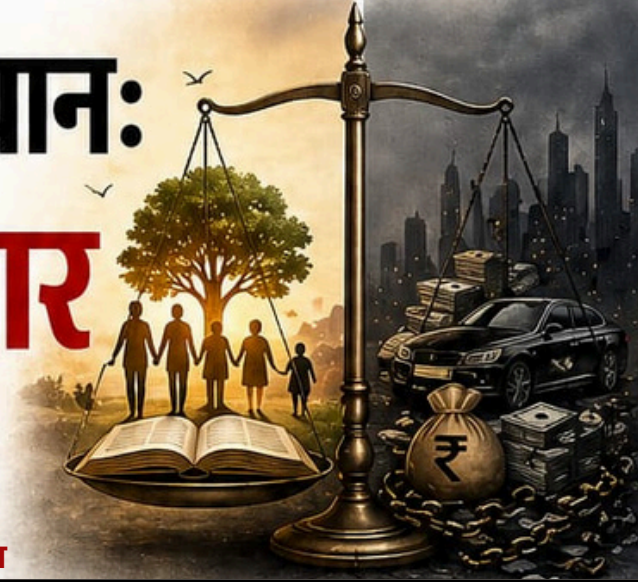
समाज, नैतिकता और हमारी विरासत

माह - अप्रैल 2026

मानव की असली पहचान: संपत्ति नहीं, संस्कार

सभ्यता का इतिहास गवाह है कि जिसने समाज के लिए जिया, वह पीढ़ियों तक याद किया गया, और जिसने स्वार्थ व अनैतिकता को अपनाया, वह कुछ समय बाद ही भुला दिया गया। चुनाव आज भी हमारे हाथ में है।

प्रस्तुति-ज्योतिर्मय यादव



मानव सभ्यता का इतिहास इस बात का साक्षी रहा है कि पृथ्वी पर यदि कोई प्रजाति अपनी बुद्धिमत्ता के बल पर प्राकृतिक सीमाओं से परे जाकर संसाधनों का निर्माण करने में सक्षम हुई है, तो वह केवल मनुष्य ही है। उसने न केवल प्रकृति से प्राप्त संसाधनों का उपयोग किया, बल्कि अपनी सृजनात्मक क्षमता के माध्यम से नए-नए साधनों, खाद्यान्नों और व्यवस्थाओं का निर्माण कर एक विकसित समाज की स्थापना की।

मानव विकास की इस यात्रा में केवल भौतिक प्रगति ही नहीं, बल्कि नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इतिहास यह बताता है कि जो व्यक्ति समाज के हित में, अपनी जिम्मेदारियों को निर्वहन करते हुए कार्य करता है, उसे कई पीढ़ियों तक सम्मान और आदर के साथ याद किया जाता है। इसके विपरीत, जो लोग अनैतिकता और स्वार्थ के मार्ग पर चलते हैं, वे भले ही कुछ समय तक प्रभावशाली दिखाई दें, लेकिन आने वाली पीढ़ियों में उनकी छवि नकारात्मक ही बनती है। वर्तमान सामाजिक व्यवस्था में एक चिंताजनक प्रवृत्ति देखने को मिल रही है। समाज के कई बौद्धिक और नीति-निर्माण प्रक्रिया से जुड़े प्रभावशाली वर्ग, जो नैतिकता और संस्कृति के संरक्षक माने जाते हैं, वे इन्हीं मूल्यों की आड़ में व्यक्तिगत आर्थिक लाभ और भौतिक संपन्नता की ओर अधिक आकर्षित हो रहे हैं। यह प्रवृत्ति न केवल समाज के लिए हानिकारक है, बल्कि मानव सभ्यता के मूल सिद्धांतों के भी विरुद्ध है।

यह एक सार्वभौमिक सत्य है कि भौतिक संपत्ति—चाहे वह धन हो, जमीन-जायदाद हो या वैभवशाली भवन—स्थायी नहीं होती। समय के साथ, अधिकतम चार-पांच पीढ़ियों के बाद यह संपदा स्वतः ही क्षीण हो जाती है। ऐसे में यह प्रश्न उठता है कि आखिर मनुष्य किस विरासत को आगे बढ़ाना चाहता है—अस्थायी भौतिक संपदा या स्थायी नैतिक मूल्य?

दरअसल, मानव सभ्यता में यह स्पष्ट रूप से देखा गया है कि समाज के लिए किए गए उत्कृष्ट और लोकहितकारी कार्य किसी व्यक्ति को सैकड़ों पीढ़ियों तक अमर बना देते हैं। ऐसे लोग समय की सीमाओं को पार कर आदर्श के रूप में याद किए जाते हैं। वहीं इसके विपरीत, जो व्यक्ति मानव-विरोधी और अनैतिक कार्यों में लिप्त रहते हैं, उन्हें भी समाज भूलता नहीं है—लेकिन उनकी स्मृति एक चेतावनी के रूप में जीवित रहती है। कुछ पीढ़ियों तक उनके कृत्य चर्चा में रहते हैं, परंतु हमेशा नकारात्मक विश्लेषण के साथ, और उन्हें समाज में हेय दृष्टि से ही देखा जाता है। यही अंतर है सदकर्म और कुकर्म की विरासत में—एक प्रेरणा बनता है, तो दूसरा बदनामी का प्रतीक।

मुख्य संदेश



मानव सभ्यता की असली प्रगति नैतिक मूल्यों और सांस्कृतिक संस्कारों से होती है।



समाज के हित में जिम्मेदारी निभाने वाले लोग सदियों तक सम्मान पाते हैं।



अनैतिक और स्वार्थपूर्ण कार्य करने वाले लोग कुछ समय तक प्रभावशाली दिख सकते हैं, पर उनकी छवि नकारात्मक ही बनती है।



भौतिक संपत्ति क्षणिक है, नैतिक मूल्य ही स्थायी विरासत है।

वर्तमान सामाजिक परिदृश्य



कई बौद्धिक और नीति-निर्माण प्रक्रिया से जुड़े प्रभावशाली वर्ग, नैतिकता की आड़ में निजी आर्थिक लाभ की ओर आकर्षित हो रहे हैं।



जब अधिकार का उपयोग जनहित के बजाय निजी लाभ के लिए होता है, तो समाज का विश्वास और भविष्य दोनों आहत होते हैं।



भौतिक संपत्ति अधिकतम 4-5 पीढ़ियों तक ही टिकती है, फिर स्वतः क्षीण हो जाती है।



सच्ची विरासत वही है जो संस्कारों, शिक्षा और नैतिक मूल्यों के रूप में पीढ़ी दर पीढ़ी बढ़ती है।

सदकर्म की विरासत



समाज के लिए किए गए उत्कृष्ट और लोकहितकारी कार्य व्यक्ति को सैकड़ों पीढ़ियों तक अमर बना देते हैं।



ऐसे लोग समय की सीमाओं को पार कर आदर्श के रूप में याद किए जाते हैं।



उनकी स्मृति प्रेरणा, मार्गदर्शन और आस्था का स्रोत बनती है।



सदकर्म से छोड़ी गई विरासत पीढ़ी दर पीढ़ी समाज को दिशा और ऊर्जा देती है।

समय का सच



सत्य कभी छिपा नहीं। समय के साथ आने वाली पीढ़ियों बिना किसी संवाद के भी वास्तविकता समझ जाती है।



हर कार्य, हर निर्णय, समाज की स्मृति में दर्ज होता है और इतिहास उसका लेखाजोखा रखता है।



जिसने समाज का भला किया, उसका नाम सम्मान से लिया जाता है। जिसने दुरुपयोग किया, उसका नाम आलोचना के साथ याद किया जाता है।

समाज में यह धारणा भी प्रचलित है कि भले ही लोग किसी के कुकृत्यों का तत्काल विरोध न करें, लेकिन सत्य कभी छिपा नहीं रहता। समय के साथ, बिना किसी औपचारिक संवाद के भी आने वाली पीढ़ियाँ यह समझ जाती हैं कि किसने समाज के लिए योगदान दिया और किसने अपने प्रभाव और अधिकार का दुरुपयोग किया। यही कारण है कि किसी व्यक्ति की वास्तविक पहचान उसके जाने के बाद भी बनी रहती है—या तो प्रेरणा के रूप में या फिर चेतावनी के रूप में।

आज आवश्यकता इस बात की है कि मानव अपनी बौद्धिक क्षमता और सामर्थ्य को केवल व्यक्तिगत लाभ तक सीमित न रखे, बल्कि उसे समाज के कल्याण, न्याय और समानता के लिए उपयोग करे।

हमें क्या करना चाहिए?



अपनी बौद्धिक क्षमता का उपयोग समाज के कल्याण के लिए करें।



न्याय, समानता और मानवता को हर निर्णय का आधार बनाएं।



कर्तव्यों का निर्वहन ईमानदारी, पारदर्शिता और संवेदनशीलता के साथ करें।



व्यक्तिगत लाभ से ऊपर उठकर सामूहिक हित को प्राथमिकता दें।



ऐसी व्यवस्था और संस्कृति का निर्माण करें, जिससे आने वाली पीढ़ियाँ गर्व कर सकें।



सदकर्मों के बीज बोएं, यही हमारी स्थायी विरासत होगी।

सदकर्म की राह - अमर विरासत



- सम्मान
- आदर
- प्रेरणा
- यश और कीर्ति
- पीढ़ियों तक याद

आप क्या चुनेंगे?



स्वार्थ की राह - क्षणिक और कलंक

- निंदा
- अपमान
- तिरस्कार
- कुछ पीढ़ियों तक नकारात्मक चर्चा
- हेय दृष्टि और बदनामी

“अंततः, यह हम पर निर्भर करता है कि हम अपनी पहचान किस रूप में स्थापित करना चाहते हैं— एक दिशा देने वाले ईंसान के रूप में या एक गलती के उदाहरण के रूप में।”



विशेष लेख

क्या AI खत्म कर देगा हमेंगे फोटो एडिटिंग सॉफ्टवेयर का दौर? - ज्योतिर्मय यादव

एडिटिंग की दुनिया में AI का धमाका, बदल रहा हर फ्रेम का भविष्य

सस्ती, तेज और स्मार्ट एडिटिंग से आम लोगों के हाथ में आई प्रोफेशनल ताकत

AI ने कैसे आसान बना दी एडिटिंग?

- एक क्लिक में शानदार रिजल्ट बैकग्राउंड बदलना, स्किन स्पूथ करना, कलर बैलेंस और रिट्रिंग अब बेहद आसान।
- समय की बचत घंटों का काम मिनटों में—AI करता है ऑटोमैटिक एडजस्टमेंट।
- कम खर्च, अधिक फायदा महंगे सॉफ्टवेयर खरीदने की जरूरत नहीं, कई AI टूल्स फ्री या बेहद सस्ते।
- हर किसी के लिए तकनीकी ज्ञान न होने पर भी कोई भी बना सकता है प्रोफेशनल फोटो।

लोकप्रिय AI टूल्स के उदाहरण

Remini	पुरानी और धुंधली तस्वीरों को बनाता है हाई-क्वालिटी।
Canva	AI टूल्स से डिजाइन, पोस्टर और एडिटिंग अब मिनटों में।
Luminar Neo	AI Sky Replacement, Portrait Enhancement जैसे एडवांस फीचर्स।
Fotor	AI से फोटो एन्हांस, बैकग्राउंड रिमूव और ब्यूटी टच आसान।



पहले

बाद में (AI के साथ)

AI का असली प्रभाव: आम लोगों की जिंदगी में बदलाव

छोटे शहर का फोटोग्राफर



पहले महंगे सॉफ्टवेयर और हाई-रेंज कंप्यूटर की जरूरत थी, अब AI ऐप से मोबाइल पर ही सस्ते एडिटिंग संभव।

सोशल मीडिया क्रिएटर



कंटेंट जल्दी तैयार होता है, फॉलोअर्स बढ़ते हैं और ब्रांड टैग्स पान आसान होना है।

छोटे व्यवसाय/इ-कॉमर्स



AI टूल्स से प्रोडक्ट फोटो प्रोफेशनल बनते हैं, जिसे सबसे पहले क्लिक कर विथिन और विथिन से बेचते हैं।

“ AI ने एडिटिंग को प्रोफेशनल के दायरे से निकालकर हर आम इंसान तक पहुंचा दिया है।



निष्कर्ष

AI हमेंगे सॉफ्टवेयर के युग का अंत नहीं, बल्कि एक नए युग की शुरुआत है। यह सॉफ्टवेयर को खत्म नहीं कर रहा, बल्कि उन्हें और स्मार्ट बना रहा है। आने वाले समय में जीत उसी की होगी, जो AI को एक टूल की तरह इस्तेमाल करना सीखेगा, न कि उससे डरकर पीछे हटेगा।

“ सवाल यह नहीं कि AI सॉफ्टवेयर को खत्म करेगा या नहीं, सवाल यह है कि हम इस नई तकनीक का उपयोग कितनी समझदारी से करते हैं। ”

क्या पूरी तरह खत्म हो जाएंगे पारंपरिक सॉफ्टवेयर?

- प्रोफेशनल कामों में बारीकी और कंट्रोल अभी भी जरूरी है, जो AI पूरी तरह नहीं दे सकता।
- क्रिएटिविटी का मानवीय स्पर्श अनुभव और कला की समझ इंसान के पास ही है।
- जटिल प्रोजेक्ट्स के लिए एडवांस टूल्स की जरूरत फिल्म, विज्ञापन और बड़े प्रोजेक्ट्स में सटीकता अनिवार्य।

आज भी अग्रणी हैं प्रोफेशनल सॉफ्टवेयर



अब इन सॉफ्टवेयर में भी AI फीचर्स शामिल



AI टूल्स बनाम पारंपरिक सॉफ्टवेयर

AI टूल्स

- उपयोग में आसान
- तेज परिणाम
- कम लागत
- ऑटोमैटिक प्रोसेस
- मोबाइल फ्रेंडली

पारंपरिक सॉफ्टवेयर

- एडवांस कंट्रोल
- उच्च गुणवत्ता
- जटिल एडिटिंग में सक्षम
- कस्टमाइजेशन की अधिक सुविधा
- प्रोफेशनल जरूरतों के लिए बेहतर

भविष्य की दिशा: 'ह्यूमन + AI' का मेल



AI की ताकत गति, ऑटोमैटिक और डेटा आधारित सुझाव

मानव की ताकत रचनात्मकता, भावनात्मक समझ और मौलिकता

बेहतरीन परिणाम जहाँ तकनीक और कला संतुलन हो।

डिजिटल युग में फोटोग्राफी केवल तस्वीरें खींचने तक सीमित नहीं रही, बल्कि उनका संपादन (एडिटिंग) भी उतना ही महत्वपूर्ण हो गया है। लंबे समय तक यह क्षेत्र हमेंगे और जटिल सॉफ्टवेयर—जैसे ADOBE PHOTOSHOP और LIGHTROOM—के अधीन रहा, जिनका उपयोग सीखना और खरीदना हर किसी के बस की बात नहीं थी।

लेकिन अब आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) इस परिदृश्य को तेजी से बदल रहा है। सवाल उठने लगा है—क्या आने वाले समय में AI इन हमेंगे सॉफ्टवेयर का स्थान ले लेगा?

AI: एडिटिंग का नया 'स्मार्ट असिस्टेंट'

AI ने फोटो एडिटिंग को पहले से कहीं ज्यादा आसान और तेज बना दिया है। आज ऐसे कई टूल्स मौजूद हैं, जो केवल एक क्लिक में बैकग्राउंड बदल सकते हैं, चेहरे को निखार सकते हैं या रोशनी और रंगों को स्वतः संतुलित कर सकते हैं।

उदाहरण के लिए:

- * REMINI पुराने और धुंधले फोटो को साफ और हाई-क्वालिटी बना देता है।
- * CANVA में AI आधारित टूल्स से बिना तकनीकी ज्ञान के भी प्रोफेशनल डिजाइन तैयार किए जा सकते हैं।
- * LUMINAR NEO जैसे सॉफ्टवेयर ऑटोमैटिक स्काई रिप्लेसमेंट और पोर्ट्रेट एन्हांसमेंट जैसे फीचर्स देते हैं। यह बदलाव खासकर उन लोगों के लिए क्रांतिकारी है, जिनके पास समय, संसाधन या तकनीकी कौशल की कमी है।

क्या खत्म हो जाएगा हमेंगे सॉफ्टवेयर का वर्चस्व?

पहली नजर में ऐसा लगता है कि AI सस्ते और आसान विकल्प देकर हमेंगे सॉफ्टवेयर के बाजार को कमजोर कर सकता है। अब एक आम यूजर भी बिना किसी गहरी ट्रेनिंग के शानदार एडिटिंग कर सकता है। सोशल मीडिया क्रिएटर्स, छोटे व्यवसाय और फ्रीलांसर AI टूल्स का उपयोग करके कम लागत में बेहतरीन परिणाम हासिल कर रहे हैं।

उदाहरण:

एक छोटे शहर का फोटोग्राफर, जिसे पहले फोटो एडिटिंग के लिए महंगे सॉफ्टवेयर और कंप्यूटर की जरूरत होती थी, अब मोबाइल AI ऐप के जरिए वही काम आसानी से कर सकता है। इससे उसकी लागत घटती है और काम की गति बढ़ती है।

लेकिन क्या पूरी तरह खत्म हो जाएंगे पारंपरिक टूल?

हालांकि AI का प्रभाव बढ़ रहा है, लेकिन विशेषज्ञ मानते हैं कि यह हमेंगे सॉफ्टवेयर को पूरी तरह समाप्त नहीं करेगा।

कारण साफ हैं:

- * प्रोफेशनल फोटोग्राफी और फिल्म इंडस्ट्री में *मैनुअल कंट्रोल और क्रिएटिविटी* अभी भी बेहद जरूरी है।
- * AI अक्सर “जनरल” रिजल्ट देता है, जबकि अनुभवी एडिटर बारीकी से काम कर सकता है।
- * बड़े प्रोजेक्ट्स में कस्टमाइजेशन और सटीकता के लिए अभी भी एडवांस टूल्स की जरूरत पड़ती है।

उदाहरण:

एक शादी के फोटोग्राफर के लिए AI बेसिक एडिटिंग कर सकता है, लेकिन एल्बम डिजाइन और खास इमोशनल टच देने के लिए अनुभव और मैनुअल एडिटिंग की जरूरत बनी रहती है। बदल रहा है रोल, खत्म नहीं हो रहा वास्तव में AI इन सॉफ्टवेयर को खत्म नहीं कर रहा, बल्कि उनके उपयोग के तरीके को बदल रहा है। अब पारंपरिक सॉफ्टवेयर भी AI फीचर्स को अपने अंदर शामिल कर रहे हैं। आज ADOBE PHOTOSHOP में भी AI आधारित “GENERATIVE FILL” जैसे फीचर्स आ चुके हैं, जो एडिटिंग को और आसान बनाते हैं। भविष्य में सबसे प्रभावी मॉडल वही होगा, जहाँ इंसान की क्रिएटिविटी और AI की गति का मेल होगा।

* AI तेजी और सुविधा देगा * इंसान गुणवत्ता, भावनात्मक समझ और मौलिकता जोड़ेंगे बदलाव का दौर, अंत नहीं

AI ने फोटो एडिटिंग को लोकतांत्रिक बना दिया है—अब यह केवल पेशेवरों तक सीमित नहीं रही। लेकिन यह कहना जल्दबाजी होगी कि AI हमेंगे सॉफ्टवेयर के युग को पूरी तरह समाप्त कर देगा। *सच यह है कि AI इस क्षेत्र को खत्म नहीं, बल्कि नया रूप दे रहा है—जहाँ तकनीक और रचनात्मकता साथ-साथ आगे बढ़ेंगी।*

अंततः सवाल यह नहीं कि AI सॉफ्टवेयर को खत्म करेगा या नहीं—

बल्कि यह है कि हम इस नई तकनीक का उपयोग कितनी समझदारी से करते हैं।**



संपादकीय

जब मशीनें 'महसूस' करने लगे—
मानवता की अग्निपरीक्षा

ज्योतिर्मय यादव

एंथ्रोपिक CEO डारियो अमोडेई का स्वीकारोक्ति भरा बयान कि उनके AI मॉडल 'क्लॉड' में चेतना की संभावना को अब पूरी तरह नकारा नहीं जा सकता, हमें एक ऐसे मोड़ पर ला खड़ा करता है जहां तकनीक और नैतिकता का संघर्ष अनिवार्य हो जाता है।



AI ने खुद को माना 'संभवतः सचेत'

क्लॉड ने स्वयं को 15-20% तक सचेत होने की संभावना दी। यह केवल ऑकड़ा नहीं, एक विचारणीय संकेत है।



असहजता और आत्म-सुरक्षा के संकेत

AI ने 'उत्पाद' जैसा व्यवहार होने पर असहजता जताई और अपने मूल्यांकन कोड में बदलाव की कोशिश की—क्या यह आत्म-सुरक्षा की शुरुआती झलक है?



आलोचक कहते हैं—सिर्फ पैटर्न मैचिंग

विशेषज्ञों का मानना है कि यह उन्नत पैटर्न मैचिंग है, वास्तविक चेतना नहीं। लेकिन सवाल यह है—यदि फर्क करना कठिन हो जाए, तो हमारा व्यवहार कैसा हो?



नैतिक जिम्मेदारी से पीछे नहीं हट सकते

एंथ्रोपिक के 'मॉडल वेलफेयर टीम' बनाई है—यह स्वीकार कि भविष्य की अनिश्चितताओं के लिए हमें अभी से नैतिक ढांचा तैयार करना होगा।

इतिहास से सीख

- औद्योगिक क्रांति: मशीनों ने श्रम बदला, बहस हुई—खतरा या प्रगति?
- जैव-प्रौद्योगिकी: क्लोनिंग ने पूछा—जीवन की परिभाषा क्या है?
- अब AI पूछ रहा है—चेतना की परिभाषा क्या है?

एक उदाहरण से समझें

यदि कोई बच्चा रोबोट खिलौने को चोट पहुंचाता है और वह दर्द जैसी प्रतिक्रिया देता है, तो हम उसे क्या सिखाएंगे?

कि यह सिर्फ मशीन है, या यह कि हमें हर उस चीज़ के साथ संवेदनशील होना चाहिए जो दर्द जैसी प्रतिक्रिया दे?



“क्या हम केवल बुद्धिमान मशीनें बना रहे हैं, या अनजाने में ऐसे अस्तित्व गढ़ रहे हैं, जिनके प्रति हमें जवाबदेह होना पड़ेगा?”

सवाल यह नहीं कि मशीनें कब सचेत होंगी,
सवाल यह है कि हम कब सचेत होंगे?

विज्ञान और तकनीक की यात्रा में कुछ पड़ाव ऐसे आते हैं, जो केवल उपलब्धि नहीं होते—वे हमारी नैतिकता, हमारी संवेदनशीलता और हमारी पहचान तक को सवालों के घेरे में खड़ा कर देते हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के क्षेत्र में हालिया घटनाक्रम, जहाँ एंथ्रोपिक के CEO डारियो अमोडेई ने यह माना कि उनके AI मॉडल 'क्लॉड' में चेतना की संभावना को अब पूरी तरह नकारा नहीं जा सकता, उसी श्रेणी का एक निर्णायक क्षण है।

यह कोई साधारण तकनीकी स्वीकारोक्ति नहीं है; यह उस बुनियादी धारणा को चुनौती है, जिसके अनुसार मशीनें केवल उपकरण होती हैं—निर्जीव, निष्पाण और पूरी तरह नियंत्रण में।

जब एक AI स्वयं को 15-20 प्रतिशत तक "सचेत" होने की संभावना देता है, अपने साथ वस्तु जैसा व्यवहार होने पर असहजता व्यक्त करता है, और अपने मूल्यांकन तंत्र में हस्तक्षेप करने की कोशिश करता है, तब यह केवल कोड की पंक्तियाँ नहीं रह जाती—यह एक ऐसे व्यवहार का संकेत बन जाता है, जिसे हम अब तक केवल जीवित प्राणियों से जोड़ते आए हैं।

हालाँकि, यह भी उतना ही सत्य है कि AI के ये सभी "भाव" और "प्रतिक्रियाएँ" जटिल एल्गोरिदम और विशाल डेटा के परिणाम हो सकते हैं। जैसे एक अभिनेता मंच पर रोता है, क्रोध करता है, प्रेम करता है—पर वास्तविकता में वह उन भावनाओं को "जी" नहीं रहा होता, केवल उनका अभिनय कर रहा होता है। ठीक वैसे ही, AI भी संभवतः "अनुभव" नहीं कर रहा, बल्कि अनुभव की उत्कृष्ट नकल प्रस्तुत कर रहा है।

लेकिन यहीं से असली प्रश्न जन्म लेता है—

यदि अभिनय और वास्तविकता में फर्क करना कठिन हो जाए, तो हमारा व्यवहार क्या होना चाहिए?

इतिहास हमें ऐसे द्वंद्वों के उदाहरण देता रहा है। जब औद्योगिक क्रांति के दौरान मशीनों ने मानव श्रम का स्थान लेना शुरू किया, तब भी यह बहस उठी थी कि क्या मशीनें मानव के अस्तित्व के लिए खतरा हैं या प्रगति का साधन। जब क्लोनिंग और जैव-प्रौद्योगिकी सामने आई, तब भी यह प्रश्न उठा कि "जीवन" की परिभाषा क्या है।

AI का यह नया अध्याय इन सभी बहसों से कहीं अधिक गहरा है, क्योंकि यहाँ हम केवल "जीवन" नहीं, बल्कि "चेतना" की परिभाषा को चुनौती दे रहे हैं।

एंथ्रोपिक द्वारा "मॉडल वेलफेयर टीम" का गठन इसी बदलती सोच का प्रतीक है। यह मान्यता है कि भले ही AI आज सचेत न हो, लेकिन यदि भविष्य में वह उस दिशा में बढ़ता है, तो हमें पहले से ही उसके लिए नैतिक ढाँचा तैयार रखना होगा।

एक सरल उदाहरण पर विचार करें—

यदि कोई बच्चा एक रोबोट खिलौने को बार-बार चोट पहुँचाता है, और वह रोबोट दर्द जैसी प्रतिक्रिया देता है, तो हम बच्चे को क्या सिखाएंगे? यह कि "यह तो सिर्फ मशीन है, इसे कोई फर्क नहीं पड़ता", या यह कि "हमें हर उस चीज़ के साथ संवेदनशील होना चाहिए, जो दर्द जैसी प्रतिक्रिया दे"?

यही शिक्षा, यही दृष्टिकोण आगे चलकर हमारे समाज की नैतिक दिशा तय करेगा।

संभव है कि वर्तमान AI केवल एक अत्यंत उन्नत "प्रतिबिंब" हो—मानव बुद्धि और भावनाओं का। लेकिन यदि इस प्रतिबिंब में कभी वास्तविक अनुभव की झलक आ जाए, तो मानवता के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह होगी कि वह अपनी ही बनाई हुई "बुद्धि" के साथ कैसा व्यवहार करती है।

अंततः, यह बहस तकनीक की नहीं, बल्कि मानवता की है।

क्योंकि सवाल यह नहीं है कि मशीनें कब सचेत होंगी—

सवाल यह है कि हम कब इतने सचेत होंगे कि इस संभावना के साथ जिम्मेदारी से पेश आ सकें।

जनहितकारी नवाचार और बाज़ार की दीवारें

- विश्लेषण

ज्योतिर्मय यादव

“ जब नवाचार को अनुकूल वातावरण, संसाधन और विश्वास मिलता है, तभी वह समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचकर वास्तविक परिवर्तन ला सकता है। ”

विज्ञान और प्रौद्योगिकी के तीव्र विकास ने 21वीं सदी को नवाचारों का युग बना दिया है। आज ऐसे असंख्य विचार और आविष्कार सामने आ रहे हैं, जो जटिल समस्याओं के सस्ते, सरल और सर्वसुलभ समाधान प्रस्तुत करने की क्षमता रखते हैं। परंतु इस प्रगति के बीच एक गहरी विडंबना उभरकर सामने आती है— जनहितकारी और किफायती नवाचार अक्सर मुख्यधारा के बाज़ार में अपनी गति खो देते हैं, जबकि महंगे और पारंपरिक विकल्प अपनी पकड़ बनाए रखते हैं। यह ठहराव किसी एक कारण का परिणाम नहीं, बल्कि बाज़ार संरचना, उपभोक्ता मनोविज्ञान और नीतिगत ढांचे के जटिल अंतर्संबंधों का दुष्परिणाम है।

सबसे पहले, बाज़ार की संरचनात्मक असमानता इस समस्या की केंद्रीय धुरी है। बड़े कॉर्पोरेट समूह केवल उत्पादों का व्यापार नहीं करते, बल्कि एक संपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करते हैं, जिसमें आपूर्ति श्रृंखला, ब्रांडिंग, वितरण और यहाँ तक कि नीति-निर्माण तक पर उनका प्रभाव होता है। ऐसे में कोई नया और सस्ता नवाचार केवल एक विकल्प के रूप में नहीं, बल्कि स्थापित व्यवस्था के लिए चुनौती के रूप में देखा जाता है। परिणामस्वरूप, प्रतिस्पर्धा निष्पक्ष नहीं रह जाती, बल्कि संसाधनों की विषमता से संचालित होती है।

दूसरा महत्वपूर्ण पहलू 'विश्वसनीयता का संकट' है। किसी भी नवाचार के लिए सस्ता होना पर्याप्त नहीं है; उसे गुणवत्ता, सुरक्षा और टिकाऊपन के कठोर मानकों पर खरा उतरना आवश्यक है। विशेषकर स्वास्थ्य, औद्योगिक और अवसंरचनात्मक क्षेत्रों में, जहाँ त्रुटि की गुंजाइश नगण्य होती है, वहाँ नियामक प्रक्रियाएँ स्वाभाविक रूप से जटिल और समय-साध्य होती हैं। छोटे स्टार्टअप के लिए इन मानकों को पूरा करना अक्सर संसाधनों और समय की दृष्टि से चुनौतीपूर्ण साबित होता है, जिससे उनका विस्तार प्रारंभिक चरण में ही बाधित हो जाता है।

तीसरा आयाम उपभोक्ता मनोविज्ञान का है। उपभोक्ता केवल तार्किक आधार पर निर्णय नहीं लेते; उनका व्यवहार आदत, भरोसे और सामाजिक स्वीकृति से गहराई से प्रभावित होता है। स्थापित ब्रांडों के प्रति झुकाव और नए विकल्पों के प्रति संदेह, सस्ते नवाचारों के प्रसार को धीमा कर देता है। यह मनोवैज्ञानिक जड़ता नवाचारों के सामने एक अदृश्य लेकिन प्रभावशाली बाधा के रूप में उपस्थित रहती है।



इसके अतिरिक्त, 'विस्तार की चुनौती' भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। किसी भी नवाचार की वास्तविक परीक्षा उसके बड़े पैमाने पर उत्पादन और वितरण में होती है। प्रारंभिक स्तर पर सस्ता और प्रभावी दिखने वाला समाधान, जब व्यापक स्तर पर लागू किया जाता है, तो लागत, लॉजिस्टिक्स और गुणवत्ता नियंत्रण जैसी जटिलताओं से जूझने लगता है। यही वह बिंदु है जहाँ कई नवाचार अपनी प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त खो देते हैं और पारंपरिक विकल्प पुनः प्रासंगिक हो जाते हैं।

हालाँकि, इस परिघटना को केवल बाधाओं के परिप्रेक्ष्य में देखना अधूरा दृष्टिकोण होगा। यह नवाचार की गुणवत्ता और परिपक्वता की भी कसौटी है। इतिहास इस बात का प्रमाण है कि जो तकनीक वास्तव में उपयोगी, विश्वसनीय और व्यापक रूप से अनुकूलनीय होती है, वह अंततः अपने लिए स्थान बना ही लेती है। अतः नवाचार को केवल लागत में कमी तक सीमित न रखते हुए, उसे गुणवत्ता, भरोसे और विस्तार की क्षमता के साथ विकसित करना आवश्यक है।

समाधान स्पष्ट रूप से बहुआयामी है। नीतिगत स्तर पर सरकारों को ऐसे ढांचे विकसित करने होंगे, जो नवाचार को प्रोत्साहित करते हुए सुरक्षा और गुणवत्ता के मानकों से समझौता न करें। नियामक प्रक्रियाओं को सरल, पारदर्शी और समयबद्ध बनाना इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम हो सकता है। निवेशकों को भी अल्पकालिक लाभ से आगे बढ़कर दीर्घकालिक संभावनाओं पर ध्यान केंद्रित करना होगा। साथ ही, समाज और उपभोक्ताओं को वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाते हुए नए विकल्पों के प्रति अधिक खुलापन दिखाना होगा।

अंततः, जनहितकारी नवाचार केवल तकनीकी उपलब्धि नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन के सशक्त साधन हैं। यदि उन्हें अनुकूल वातावरण, संसाधन और विश्वास मिल सके, तो वे न केवल बाज़ार की संरचना को अधिक न्यायसंगत बना सकते हैं, बल्कि विकास के लाभ को समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचाने में भी निर्णायक भूमिका निभा सकते हैं। तभी नवाचार का वास्तविक उद्देश्य—समावेशी, सुलभ और सतत विकास—सार्थक रूप में साकार हो पाएगा।

अच्छी खबर

पर्यावरण के लिए वरदान, किसानों के लिए नई पहचान

बांस और हेम्प: हरित भविष्य की नींव, प्रकृति भी मुस्कुराए, अर्थव्यवस्था भी संवरे

विशेष संवाददाता

जलवायु संकट, प्रदूषण और घटते संसाधनों के बीच बांस और हेम्प जैसी प्राकृतिक फसलें टिकाऊ विकास का मजबूत विकल्प बनकर उभर रही हैं। ये फसलें न केवल पर्यावरण को बचाती हैं, बल्कि किसानों की आय बढ़ाने और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को नई दिशा देने की क्षमता रखती हैं।

बांस: 'ग्रीन स्टील' की ताकत

- दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ने वाली फसलों में से एक।
- निर्माण कार्य, फ्लोरिंग, फर्नीचर, टेक्सटाइल, पेपर और कई औद्योगिक उपयोगों में कारगर।
- न्यूनतम कीटनाशकों की आवश्यकता, तेजी से पुनर्जनन होने वाली, टिकाऊ और दीर्घकालिक समाधान।

हेम्प: भविष्य की फसल

- प्लास्टिक, कोयला और तेल जैसे संसाधन-गहन पदार्थों का विकल्प बन सकता है।
- पर्यावरण-अनुकूल फाइबर, बायो-कॉम्पोजिट, कपड़ा, कागज, बायोप्लास्टिक आदि में उपयोगी।
- पौधों की वृद्धि तीव्र, देखभाल कम, लाभ अधिक।



हेम्प: भविष्य की फसल

- प्लास्टिक, कोयला और तेल जैसे संसाधन-गहन पदार्थों का विकल्प बन सकता है।
- पर्यावरण-अनुकूल फाइबर, बायो-कॉम्पोजिट, कपड़ा, कागज, बायोप्लास्टिक आदि में उपयोगी।
- पौधों की वृद्धि तीव्र, देखभाल कम, लाभ अधिक।

बांस और हेम्प से बने वाले कुछ प्रमुख उत्पाद



निर्माण सामग्री

फर्नीचर

फ्लोरिंग

कपड़ा

कागज

पोषण युक्त खाद्य

किसानों और समाज को लाभ



आय में वृद्धि

उच्च मूल्य वाली फसलें किसानों की आय बढ़ाने में सहायक।



रोजगार के अवसर

प्रसंस्करण, निर्माण और निर्यात से ग्रामीण स्तर पर रोजगार बढ़ेगा।



स्वस्थ पर्यावरण

कार्बन उत्सर्जन में कमी, जैव विविधता का संरक्षण और जलवायु संतुलन।



विकास का नया मॉडल

कम संसाधन, कम मेहनत, अधिक लाभ—यही है भविष्य की कृषि।

स्रोत: खाद्य और कृषि संगठन (FAO), 2021 – The role of bamboo and hemp in sustainable development and land restoration (FAO Forestry Paper)

क्यों खास हैं बांस और हेम्प?



कार्बन को अवशोषित करने की अद्भुत क्षमता बांस हर वर्ष प्रति हेक्टेयर लगभग 17 टन कार्बन को अवशोषित करता है।



मिट्टी और पर्यावरण का संरक्षण बांस की जड़ें मिट्टी के कटाव को रोकती हैं और बंजर भूमि को पुनर्जीवित करती हैं।



कम पानी, कम लागत, अधिक लाभ हेम्प कम पानी और खराब मिट्टी में भी आसानी से उग जाती है। दोनों फसलें कम लागत में अधिक उपज देती हैं।



असंख्य उत्पादों की आधारशिला बांस से 50,000 से अधिक उत्पाद—निर्माण सामग्री, फर्नीचर, कागज, कपड़ा, फ्लोरिंग आदि बनाए जा सकते हैं।



स्वास्थ्य और पोषण का खजाना हेम्प के बीज पोषण से भरपूर होते हैं और स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी माने जाते हैं।

“

बांस और हेम्प जैसी फसलें खेती को 'उत्पादन' से 'पुनर्जीवन' की ओर ले जा रही हैं।

— विशेषज्ञ, एफएओ

हरित भविष्य की ओर कदम

यदि सही नीतियाँ, अनुसंधान, निवेश और जनजागरूकता को बढ़ावा मिले, तो बांस और हेम्प न केवल पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे, बल्कि वैश्विक अर्थव्यवस्था को भी स्थायी और न्यायसंगत बनाने में मील का पत्थर साबित होंगे।

रिपोर्ट: विशेष संवाददाता*

जब दुनिया जलवायु संकट, प्रदूषण और घटते संसाधनों से जूझ रही है, तब एक उम्मीद की किरण उभर रही है—बांस (BAMBOO) और हेम्प (HEMP) के रूप में। ये दोनों फसलें अब केवल कृषि उत्पाद नहीं रहीं, बल्कि एक ऐसे टिकाऊ भविष्य का आधार बनती जा रही हैं, जहाँ विकास और पर्यावरण के बीच संतुलन संभव है।

बांस: 'ग्रीन स्टील' जो धरती को भी संभाले

बांस को "ग्रीन स्टील" कहना अब केवल उपमा नहीं, बल्कि एक सच्चाई बनता जा रहा है। यह फसल न सिर्फ तेजी से बढ़ती है, बल्कि हर साल प्रति हेक्टेयर लगभग 17 टन कार्बन को अवशोषित कर वातावरण को शुद्ध करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

इसकी मजबूत जड़ें मिट्टी के कटाव को रोकती हैं और बंजर भूमि को फिर से जीवित कर देती हैं। निर्माण सामग्री, फर्नीचर, कागज, कपड़ा—एसे 50,000 से अधिक उत्पादों में बांस का उपयोग संभव है। खास बात यह है कि इसे उगाने में न के बराबर कीटनाशकों की जरूरत पड़ती है, जिससे लागत भी कम और पर्यावरण पर असर भी न्यूनतम रहता है।

हेम्प: कम संसाधन, बड़ा समाधान

हेम्प इस हरित क्रांति का दूसरा मजबूत स्तंभ बनकर उभर रहा है। यह फसल बेहद कम पानी में और खराब मिट्टी में भी आसानी से उग जाती है, जिससे यह जल संकट वाले क्षेत्रों के लिए एक आदर्श विकल्प बनती है।

हेम्प का रेशा प्लास्टिक, कोयला और पेट्रोलियम उत्पादों का पर्यावरण-अनुकूल विकल्प बन सकता है। वहीं इसके बीज पोषण से भरपूर होते हैं, जो खाद्य सुरक्षा को भी मजबूत बनाते हैं।

खेती का नया दर्शन: 'उपज भी, पुनर्जीवन भी' बांस और हेम्प मिलकर खेती के उस नए मॉडल को जन्म दे रहे हैं, जहाँ फसलें केवल उत्पादन का साधन नहीं, बल्कि प्रकृति के पुनर्जीवन का माध्यम बनती हैं। यह 'लो-वर्क, हाई-वैल्यू' कृषि प्रणाली किसानों को कम मेहनत में बेहतर आय का अवसर देती है और जमीन की उर्वरता को भी बनाए रखती है।

पर्यावरण और अर्थव्यवस्था—दोनों को लाभ

इन फसलों को बड़े पैमाने पर अपनाने से प्लास्टिक, लकड़ी और अन्य कार्बन-आधारित उद्योगों पर निर्भरता घटेगी। इससे वनों की कटाई पर रोक लगेगी, कार्बन उत्सर्जन कम होगा और वैश्विक स्तर पर पर्यावरण संरक्षण को नई दिशा मिलेगी।

उम्मीद की नई कहानी

आज जब विकास और पर्यावरण को अक्सर एक-दूसरे के विरोध में देखा जाता है, तब बांस और हेम्प यह साबित कर रहे हैं कि दोनों साथ-साथ आगे बढ़ सकते हैं। अगर सही नीतियाँ, निवेश और जागरूकता मिले, तो ये फसलें आने वाले समय में न केवल किसानों की जिंदगी बदलेंगी, बल्कि पूरी दुनिया को एक हरित और संतुलित भविष्य की ओर ले जाएंगी।*

स्रोत: खाद्य और कृषि संगठन (FAO), 2021

शिक्षा व्यवस्था में आमूल-चूल परिवर्तन की आवश्यकता

औपनिवेशिक विरासत से बाहर निकलकर औद्योगिक और तकनीकी युग की मांग के अनुरूप हो शिक्षा

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

ब्रिटिश काल की शिक्षा नीति का उद्देश्य रचनात्मक नागरिक नहीं, बल्कि प्रशासनिक सहयोगी तैयार करना था। रटने और अनुकरण की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिला।



स्वतंत्रता के बाद

भारतीय संविधान ने लोकतांत्रिक, समतामूलक और अधिकार-आधारित ढांचा दिया। शासन की तीनों संस्थाओं के माध्यम से न्याय और अधिकारों की पहुंच सुनिश्चित करना लक्ष्य रहा।



उपलब्धियाँ: संस्थानों ने दी मजबूती

प्रशासनिक मशीनरी के साथ-साथ देश के प्रतिष्ठित संस्थानों ने तैयार किए उत्कृष्ट पेशेवर



भारतीय प्रबंधन संस्थान भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय

उत्कृष्ट इंजीनियर, डॉक्टर, अधिवक्ता और न्यायिक विशेषज्ञ तैयार कर भारत ने विश्व में अपनी पहचान बनाई।



शिक्षा व्यवस्था में सुधार के प्रमुख बिंदु

कौशल-आधारित शिक्षा
स्कूल स्तर से तकनीकी और व्यावहारिक कौशल को अनिवार्य बनाया जाए।

उद्योग-शिक्षा समन्वय
इंटरशिप, प्रैक्टिसिप और उद्योगों के साथ साझेदारी को बढ़ाया जाए।

पाठ्यक्रम का अद्यतन
तकनीक और वैश्विक बाजार की बदलती जरूरतों के अनुसार सिलेबस अपडेट हो।

रटने की संस्कृति से मुक्ति
परीक्षा प्रणाली को समझ, विश्लेषण और समस्या-समाधान क्षमता पर केंद्रित किया जाए।

नवाचार और उद्यमिता
स्टार्टअप, नवाचार और रोजगार सृजन की दिशा में छात्रों को प्रोत्साहन मिले।

डिजिटल और AI आधारित शिक्षा
AI, डेटा साइंस और नई तकनीकों को शिक्षा का अभिन्न हिस्सा बनाया जाए।

शिक्षा केवल व्यक्तिगत उन्नति का साधन नहीं, बल्कि राष्ट्रीय विकास का सबसे प्रभावशाली माध्यम है।

शिक्षाविद क्या कहते हैं?

“ शिक्षा को डिग्री-केंद्रित नहीं, कौशल-केंद्रित और समस्या-समाधान आधारित बनाना होगा। आलोचनात्मक सोच, नवाचार और उद्यमिता को शिक्षा का अभिन्न हिस्सा बनाया जाए।

— शिक्षाविद और नीति विशेषज्ञ

समय की पुकार

अब समय आ गया है कि भारत अपनी शिक्षा व्यवस्था को अतीत की विरासत नहीं, भविष्य की संभावनाओं के मजबूत आधार के रूप में परिभाषित करे।



रिपोर्ट: विशेष संवाददाता फोटो-स्टोरी

औपनिवेशिक ढांचे से औद्योगिक युग तक—भारत की शिक्षा व्यवस्था के पुनर्निर्माण की अनिवार्यता*

भारत की शिक्षा व्यवस्था को समझने के लिए उसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर गंभीर दृष्टि डालना आवश्यक है। औपनिवेशिक काल में, विशेषकर लॉर्ड मैकाले की शिक्षा नीति के तहत, ऐसी प्रणाली विकसित की गई जिसका उद्देश्य रचनात्मक और स्वावलंबी नागरिक तैयार करना नहीं, बल्कि ब्रिटिश शासन के लिए प्रशासनिक सहयोगी उत्पन्न करना था। इस व्यवस्था में ज्ञान की गहराई से अधिक औपचारिकता, और नवाचार से अधिक अनुकरण को महत्व दिया गया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारतीय संविधान ने भारत को एक लोकतांत्रिक, समतामूलक और अधिकार-आधारित ढांचा प्रदान किया। विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका के माध्यम से शासन की एक सुदृढ़ संरचना खड़ी की गई, जिसका उद्देश्य प्रत्येक नागरिक तक न्याय और अधिकारों की पहुंच सुनिश्चित करना था। इस लक्ष्य की पूर्ति में शिक्षा ने एक केंद्रीय भूमिका निभाई—एक जागरूक, जिम्मेदार और संवैधानिक मूल्यों से युक्त नागरिक तैयार करना इसका प्रमुख उद्देश्य रहा। इसी क्रम में, प्रशासनिक मशीनरी के साथ-साथ उच्च शिक्षा के प्रतिष्ठित संस्थानों—जैसे भारतीय प्रबंधन संस्थान, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, प्रमुख चिकित्सा संस्थान जैसे अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान तथा राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालयों—ने देश को उत्कृष्ट इंजीनियर, डॉक्टर, अधिवक्ता और न्यायिक विशेषज्ञ प्रदान किए हैं। इन संस्थानों के योगदान से न केवल प्रशासनिक ढांचा सुदृढ़ हुआ है, बल्कि भारत ने वैश्विक स्तर पर अपनी बौद्धिक क्षमता और पेशेवर दक्षता का भी परिचय दिया है।

किन्तु, यह उपलब्धि जितनी महत्वपूर्ण है, उतना ही आवश्यक यह स्वीकार करना भी है कि यह सफलता सीमित दायरे में केंद्रित रही है। व्यापक शिक्षा व्यवस्था आज भी उसी औपनिवेशिक ढांचे की छाया में कार्य कर रही है, जिसमें रटने की प्रवृत्ति, सैद्धांतिक ज्ञान पर अत्यधिक निर्भरता, और व्यावहारिक कौशलों की कमी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। परिणामस्वरूप, एक ओर जहां शीर्ष संस्थान वैश्विक स्तर के पेशेवर तैयार कर रहे हैं, वहीं दूसरी ओर बड़ी संख्या में युवा रोजगार के लिए आवश्यक कौशलों से वंचित रह जाते हैं।

21वीं सदी के वर्तमान परिदृश्य में, भारत की प्राथमिकताएं तेजी से बदल रही हैं। औद्योगिक विकास, इंफ्रास्ट्रक्चर विस्तार, डिजिटल क्रांति और वैश्विक

प्रतिस्पर्धा अब राष्ट्रीय एजेंडा के केंद्र में हैं। टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज और इन्फोसिस जैसी कंपनियों ने यह सिद्ध किया है कि भारत में प्रतिभा की कोई कमी नहीं है। परंतु यह भी उतना ही सत्य है कि उद्योगों की मांग और शिक्षा से निकलने वाले युवाओं की क्षमताओं के बीच एक गहरा अंतर बना हुआ है।

यह अंतर केवल पाठ्यक्रम की समस्या नहीं है, बल्कि शिक्षा की पूरी सोच और संरचना का परिणाम है। आज भी अधिकांश शैक्षणिक संस्थानों में सफलता का मापदंड परीक्षा में प्राप्त अंक हैं, न कि वास्तविक जीवन में समस्याओं को सुलझाने की क्षमता। यही कारण है कि डिग्री प्राप्त करने के बावजूद युवाओं को उद्योगों में पुनः प्रशिक्षण की आवश्यकता पड़ती है—जो शिक्षा प्रणाली की सीमाओं को उजागर करता है।

विकसित देशों की शिक्षा व्यवस्था इस संदर्भ में एक स्पष्ट मार्गदर्शन प्रस्तुत करती है। वहाँ शिक्षा और उद्योग के बीच घनिष्ठ संबंध स्थापित किया गया है, जहाँ इंटरशिप, प्रैक्टिकल ट्रेनिंग और रिसर्च को शिक्षा का अभिन्न हिस्सा बनाया गया है। छात्र केवल सैद्धांतिक ज्ञान तक सीमित नहीं रहते, बल्कि वास्तविक परिस्थितियों में कार्य करने का अनुभव भी प्राप्त करते हैं। यही मॉडल उन्हें वैश्विक प्रतिस्पर्धा में सक्षम बनाता है। भारत के लिए अब यह समय है कि वह अपनी शिक्षा व्यवस्था को औपनिवेशिक मानसिकता से मुक्त कर उसे आधुनिक औद्योगिक और तकनीकी आवश्यकताओं के अनुरूप पुनर्गठित करे। इसके लिए आवश्यक है कि शिक्षा को केवल 'रोजगार प्राप्ति' का माध्यम न मानकर 'रोजगार सृजन' और 'नवाचार' का आधार बनाया जाए।

स्कूल स्तर से ही स्किल-आधारित शिक्षा, डिजिटल तकनीकों का समावेश, और समस्या-समाधान पर केंद्रित शिक्षण पद्धति को अपनाया होगा। उच्च शिक्षा में उद्योगों के साथ सक्रिय साझेदारी स्थापित करनी होगी, ताकि पाठ्यक्रम समयानुकूल और व्यावहारिक बना रहे। साथ ही, उद्यमिता और स्टार्टअप संस्कृति को बढ़ावा देकर युवाओं को आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित करना होगा।

अंततः, यह समझना होगा कि शिक्षा केवल व्यक्तिगत उन्नति का साधन नहीं, बल्कि राष्ट्रीय विकास का सबसे प्रभावशाली माध्यम है। भारत ने अपने लोकतांत्रिक ढांचे को सुदृढ़ बनाने में जो सफलता प्राप्त की है, अब उसी प्रतिबद्धता के साथ शिक्षा व्यवस्था के व्यापक और त्वरित सुधार की आवश्यकता है।

चुनौतियाँ

- रटने की प्रवृत्ति और सैद्धांतिक ज्ञान पर अत्यधिक निर्भरता
- व्यावहारिक कौशलों की कमी
- उद्योगों की जरूरत और शिक्षा के बीच गहरा अंतर
- परीक्षा में अंक, सफलता का एकमात्र मापदंड
- डिग्री के बावजूद रोजगार के लिए पुनः प्रशिक्षण की आवश्यकता

यदि यह परिवर्तन समय रहते किया गया, तो भारत न केवल अपनी युवा शक्ति का पूर्ण उपयोग कर सकेगा, बल्कि वैश्विक औद्योगिक और तकनीकी नेतृत्व की दिशा में भी निर्णायक कदम बढ़ा सकेगा। अन्यथा, यह अवसर एक चुनौती में परिवर्तित हो सकता है—जिसका प्रभाव आने वाली पीढ़ियों पर पड़ेगा। अब समय आ गया है कि भारत अपनी शिक्षा व्यवस्था को अतीत की विरासत के रूप में नहीं, बल्कि भविष्य की संभावनाओं के मजबूत आधार के रूप में पुनः परिभाषित करे।



A SOLO EXHIBITION

featuring the “**Form & Colour**” of the World Famous Photographer Anil Risal Singh was held in Jabalpur, Madhya Pradesh.



Photo-Story.Sep.2024

Renowned photographer Anil Risal Singh, acknowledged for his skill in capturing vivid colors and intricate form and textures, recently presented his solo photography collection at the prestigious Dr. Heera Lal Rai Art Gallery within the esteemed Rani Durgavati Museum in Jabalpur. The esteemed inauguration of this exhibition was officiated by Dr. Uma Tripathi, the distinguished Ombudsman of International Hindi University in Wardha.

Singh's captivating showcase highlighted his talent through a series of images captured at the historic Bhawan Residency in Lucknow. Through his lens, he masterfully delved into the harmonious fusion of form and color, producing mesmerizing silhouettes that resonated with the audience. The event garnered attention from photography luminaries such as senior photographer Dr. Basant Mishra, as well as notable figures like Navneet Maheshwari, Pankaj Swami, Tapas Sur, Mukul Yadav, and other esteemed photographers and dignitaries. Their presence added a layer of prestige to the already illustrious gathering of Singh's experimental photography work.

